jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 10:01 PM Page 20

1962 में उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं के वर्ग में डॉ. लोहिया आए। 1963 के लोक सभा के मध्यावधि चुनावों में डॉ. लोहिया को फरूखाबाद से जिताने में जनसंघ कार्यकर्ताओं ने जी-जान से काम किया। नानाजी ने डॉ. लोहिया और दीनदयाल जी का भारत-पाक महासंघ पर ऐतिहासिक संयुक्त वक्तव्य जारी होने की स्थिति पैदा की। 1958 में उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. संपूर्णानंद के मंत्रिमंडल से चन्द्रभानु गुप्त और चौ. चरण सिंह ने त्याग-पत्र देकर संकट पैदा किया तो डॉ. संपूर्णानंद ने नानाजी की सहायता मांगी। तभी चरण सिंह ने नानाजी से कहा कि "मुझे उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री कब बनाओगे?" नानाजी ने कहा "जब हमारे पास अपने 100 विधायक होंगे।" 1967 में यह स्थिति आयी तो नानाजी ने चरण सिंह को कांग्रेस से बाहर आकर सरकार बनाने का न्योता दिया और चरण सिंह अपने 16 विधायकों को लेकर कांग्रेस से बाहर आकर जनसंघ के कंधों पर सवार हो मुख्यमंत्री बन गए। 1967 में बिहार, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश और राजस्थान आदि अनेक राज्यों में गैर कांग्रेसी संयुक्त विधायक दल सरकारों के गठन में नानाजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

चुनाव राजनीति में व्यक्तिगत सत्ताकांक्षा में से उत्पन्न अवसरवाद, दल-बदल, जातिवाद, विश्वासघात आदि दुर्गुणों को देखकर नानाजी मन ही मन बहुत दुःखी रहते थे। डॉ. लोहिया ने गैरकांग्रेसवाद का नारा देकर राजनीति को नकारात्मक बना दिया। उन्होंने नानाजी को बताया कि वैश्य कुल में जन्म होने के कारण मेरे साथी मेरे लिए सुरक्षित सीट नहीं खोज पा रहे हैं। नानाजी ने पाया कि सभी बड़े-बड़े नेता दल-बदल कर अपने लिए सत्ता पाना चाहते हैं, राष्ट्रहित की उन्हें कोई चिंता नहीं। उनकी राजनीति केवल चुनाव लड़ने तक सीमित है। चुनाव जीतने के लिए वे जातिवाद, अल्पसंख्यकवाद का सहारा लेते हैं। वे जनता के बीच काम नहीं करते, कोई संगठन खड़ा नहीं करते। वे केवल जोड़-तोड़ में लगे रहते हैं। उस काल में नानाजी ने राजनीति के अखाड़े में चल रहे दांव-पेंचों के प्रयोग में भी अपनी धाक जमा दी थी। सी.वी. गुप्ता जैसे धुरंधर राजनीतिज्ञ उनसे डरने लगे। कोई उन्हें 'चाणक्य' कहता तो कोई 'नाना फणनवीस'। उत्तर प्रदेश में प्रत्येक राजनीतिक उथल-पुथल के पीछे नानाजी का हाथ टटोला जाने लगा। किन्तु नानाजी की राजनीति अपने लिए नहीं, राष्ट्र के लिए थी। 14 अगस्त 1979 को चौ. चरण सिंह के नाम अपने लंबे खुले

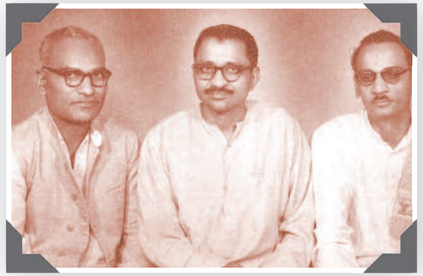

पत्र में नानाजी ने चरण सिंह की व्यक्तिगत सत्ताकांक्षा और अवसरवादी राजनीति का तिथिवार तथ्यात्मक वर्णन करते हुए लिखा कि, "मैंने राजनीति में प्रवेश अपने लिए नहीं, राष्ट्र-निर्माण के लक्ष्य को पाने के लिए किया है।"

जनसंघ में 1951 से 1961 तक नानाजी का कार्यक्षेत्र उत्तर प्रदेश रहा। 1962 के आम चुनाव में उन्हें अखिल भारतीय दायित्व मिल गया। चुनाव-तंत्र खड़ा करने से लेकर चुनाव-कोष जमा करने तक का भार उन पर आ पड़ा। जिसके लिए उन्होंने देश के उद्योगपतियों से संबंध स्थापित किए। 1967 के चुनाव में भारतीय जनसंघ कांग्रेस के बाद सबसे बड़े विपक्षी दल के रूप में उभर आया। तभी दुर्भाग्य से जनसंघ के दर्शनकार और श्रद्धाकेन्द्र पं. दीनदयाल उपाध्याय की अध्यक्ष पद संभालने के कुछ ही समय बाद 11 फरवरी 1968 को काशी के वाद मुगलसराय स्टेशन पर रहस्यमय ढंग से हत्या हो गई। नानाजी पर यह भारी व्यक्तिगत आघात था। कई महीने तक वे दीनदयाल जी की हत्या के रहस्य का पता लगाने में जुटे रहे। चन्द्रचूड आयोग के सामने दस्तावेजी एवं मौखिक साक्ष्य पेश करते रहे। साथ ही उन्होंने दीनदयाल जी के चिंतन और कर्म को आगे बढ़ाने के लिए अटल जी की अध्यक्षता में दीनदयाल उपाध्याय स्मारक समिति का गठन करके उसका सचिव पद स्वयं संभाला। 1968 में ही दीनदयाल उपाध्याय स्मारक समिति के पहले प्रकाशन के रूप में उन्होंने अंग्रेजी साप्ताहिक 'आर्गनायजर' में छपे दीनदयाल जी के लेखों का एक संकलन 'पॉलिटिकल डायरी' शीर्षक से मुंबई की प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था 'जेको' द्वारा प्रकाशित कराया। उस पुस्तक की भूमिका अपने व्यक्तिगत संबंधों के आधार पर कांग्रेसी नेता और काशी विद्यापीठ के कुलपति डॉ. संपूर्णानंद से लिखवाई। दीनदयाल जी की स्मृति में "दीनदयाल शोध संस्थान" की स्थापना की। दिल्ली में उसके सात मंजिले भवन की वास्तुकला और सज्जा में नानाजी की कलात्मक प्रतिभा की छाप बहुत स्पष्ट है। शोध संस्थान के प्रवेश कक्ष की दीवारों पर उन्होंने भारत के सांस्कृतिक प्रवाह की चित्रमय झांकी को उत्कीर्ण कराया। दीनदयाल जी की प्रतिमा स्थापित की। 1972 में श्री अरविंद के जन्मदिवस पर सरसंघचालक श्री गुरुजी के द्वारा उसका औपचारिक उद्घाटन कराया। इस अवसर पर यज्ञवेदी में आहुति देते हुए श्री गुरुजी का चित्र पूरे भारत में छा गया। इसी प्रकार छठी मंजिल में श्री गुरुजी का खड़ी

अपने प्रेरणा-पुरुष पं. दीनदयाल उपाध्याय के पार्थिव शरीर के सम्मुख स्तब्ध नानाजी